CAAE– 13 (H)

सहायक लेखा अधिकारी सामूहिक परीक्षा, 2017

दिसम्बर, 2018

सार लेखन, मसौदा और व्याकरण

(पुस्तकों के बिना)

समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

अनुदेश :

1. इस प्रश्न पत्र में कुल **7** प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।
3. पृष्ठ या उसका कोई भाग खाली छोड़ने पर उसे स्पष्ट रूप से काट दें।

टिप्पणियां : इस प्रश्न पत्र में **3** पृष्ठ और **7** प्रश्न हैं।

1. निम्नलिखित अनुच्छेद का सार लिखिये और उसे उपयुक्त शीर्षक दीजिये।

स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) का राष्ट्रीय ग्रामीण आंजीविका मिशन (एनआरएलएम) के रूप में पुनगर्ठन किया गया जिसे बाद में "आजीविका" नाम दिया गया ताकि इसे पूरे देश में एक अभियान के रूप में लागू किया जा सके और 3 जून, 2011 को औपचारिक रूप से इसकी शुरूआत कर दी गयी। 1999 में इसकी शुरूआत से, एसजीएसवाई के अंतर्गत 42.05 लाख स्वयं सहायता समूह (एसएचजीएस) बनाये गये है जिनमें महिला एसएचजीएस की संख्या कुल का लगभग 60 प्रतिशत है।

वर्ष 2013–14 के दौरान एनआरएलएम के अंतर्गत एसएचजीएस की कुल संख्या 13,15,437 है जिसमें से 2,19,061 (अथवा 17 प्रतिशत) को इस वित्तीय वर्ष में शुरू किया जा चुका है। वर्ष 2013–14 के लिए एनआरएलएम को आबंटित राशि 4000 करोड़ रूपये रखी गयी है जो कि पिछले वर्ष के बजट अनुमान से 85 करोड़ रूपये अधिक है। इसमें से, सितम्बर, 2013 तक 858.41 करोड़ रूपये की राशि जारी की जा चुकी है। विभिन्न मूल्यांकन अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण आजीविका कार्यक्रम ग्रामीण गरीबी को कम करने में वहां अपेक्षाकृत सफल रहे जहां गरीबों को व्यवस्थित रूप से स्वयं सहायता समूह में शामिल किया गया है, उनकी क्षमता और कौशल का विकास किया गया है तथा अग्रवर्ती और पिछड़े संयोजनों पर गहन प्रकिया अपनाई गयी है। इन कार्यों को करने के लिए आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि में बनाए गये समर्पित प्रशासनिक ढांचों जिनमें बाजार से लिए गये पेशेवर लोग शामिल थे, ने वहां एसएचजी अभियान में सफलतापूर्वक योगदान दिया। परन्तु देश में अन्य स्थानों पर समर्पित पेशेवर कार्यान्वयन ढांचों, एवं क्रमिक सामाजिक गतिशीलता और संस्थान निर्माण कार्यकलापों के न होने के कारण स्कीम की प्रगति कुछ धीमी रही। इसके अलावा कि विभिन्न राज्य संस्था निर्माण के संदर्भ में प्रगति के विभिन्न चरणों में थे, प्रत्येक राज्य के लिए विशिष्ट नीतियों की आवश्यकता होगी। समान केंद्रीकृत मार्गनिर्देश सभी राज्यों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकेंगे। इसलिए प्रत्येक राज्य की उसकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न या राज्य विशिष्ट नीतियां विकसित करने की जरूरत होगी।

एसजीएसवाई/एनआरएलएम स्कीम कई स्थानों पर भलीभांति कार्य कर रही है। उदाहरण के लिए कुंडापुरा तालुक का अलुर जी.पी. अपने मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए जाना जाता है। लाभार्थियों में से एक, एक कुम्हार औसतन 1 लाख रूपये मासिक लाभ प्राप्त कर रहा था और उसे अपने उत्पाद को स्थानीय बाजार में बेचने मे भी कोई कठिनाई नहीं आयी। उसने एनआरएलएम के अंतर्गत ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित ग्राम शिल्प मेंलों और आईआईटीएफ मेंलों के लिए भी कई बार दिल्ली का दौरा किया। यद्यपि मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य तेजी से बढ़ा है परन्तु अन्य कार्यकलापों में कोई प्रगति नहीं हुई हैं और ग्रामीणों को ऐसे कार्यों की कोई जानकारी नहीं थी जिनके लिए सरकारी सहायता उपलब्ध थी।

एसजीएसवाई/एनआरएलएम जिसमें एसएचजीएस शामिल थे, ने कई स्थानों पर बहुत अच्छा कार्य किया है।

उदाहरण के लिए, श्यानबोगनहल्ली, मैसूर जिले में वंदना महिला एसएचजी में मुख्य कार्य अगरबत्ती बनाना है। एसएचजी के सदस्य आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं और अपने परिवार की आय में योगदान दे रहे है। कुछ सदस्यों के बच्चों ने चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम/डिग्री पूरी कर ली है। इस एसएचजी ने यह शर्त भी लगायी है कि यदि एसएचजी से ऋण सुविधा का लाभ प्राप्त करना है तो घर में शौचालय होना चाहिए। एसजीएसवाई स्कीम के अंतर्गत एसएचजी "वंदना महिला" इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि ऐसे स्वरोजगार के कार्यों से महिलाओं में आत्मविश्वास आता है। तथापि, उनके लिए बाजार की अधिक जानकारी की आवश्यकता है क्योंकि उनकी ज्यादातर बिक्री मैसूर और उसके आसपास के इलाकों में होती है। अग्रवर्ती संयोजनों से लाभ पाने के लिए अवसंरचना सहायता की भी आवश्यकता होती है। ऐसे एसएचजीएस को देश के विभिन्न भागों में लगने वाली प्रदर्शनियों और उपलब्ध सुविधाओं की भी जानकारी दी जानी चाहिए। उद्योग, सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम, विभाग (केंद्रीय और राज्य दोनों) उनके उत्पादों को बेचने के लिए विभिन्न बाजार/मेले आयोजित करके इस प्रकार के एसएचजीएस की सहायता कर सकते है। उन्हें समुचित मार्गदर्शन की भी आवश्यकता है क्योंकि उन्होंने जड़ी–बूटी से बनी अगरबत्ती का नाम मसाला अगरबत्ती रख दिया था।

अन्य उदाहरण में औरंगाबाद में आतिथ्य प्रशिक्षण केंद्र है। प्रथम अरोड़ा शिक्षा केंद्र आवासीय प्रशिक्षण सुविधा केंद्र, नारदाबाद ब्लाक–खुल्ताबाद में स्थापित किया गया है। आतिथ्य पाठ्यक्रम 3 प्रकार का है – खाद्य और पेय पदार्थ, गृह व्यवस्था और बेकरी। पाठ्यक्रम का स्वरूप सम्बद्ध ज्ञान रखने वाले भागीदार – ताज ग्रुप आफ होटल्स एंड रिसॉर्ट्स के साथ परामर्श करके तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम की अवधि 3 माह है और पाठ्यक्रम पूरा होने पर सम्बद्ध नियोजन भागीदारों जैसे ताज ग्रुप आफ होटल्स एंड रिसॉर्ट्स में परिसर साक्षात्कार के माध्यम से नियोजन किया जाता है। प्रशिक्षण केंद्र, शयनागार, कक्षा कक्षों, निदर्शन कक्षों, कम्प्यूटर प्रयोगशाला और अन्य आवश्यक अवसंरचना से सज्जित है और 450 छात्रों से भी अधिक को प्रशिक्षित किया जा चुका है जिसमें से 420 का इस समय नियोजन कर दिया गया है।

एसजीएसवाई स्कीम नूरलबेट्टू (एडू गांव) में भी अच्छी तरह से कार्य कर रही है और उसके लाभार्थियों की उनकी अपनी दर्जी की दुकान, ब्यूटी पार्लर आदि हैं। परन्तु गाय खरीदने के लिए दी गयी सहायता पूर तरह से सफल नहीं है क्योंकि उत्पाद बेचने की कोई संभावना नहीं है। दूध इकट्ठा करने का कोई वाहन या केंद्र नहीं है अतः लाभार्थियों को दूध की बिक्री स्थानीय रूप से करनी पड़ी। इस प्रयोजन के लिए दूध इकट्ठा करने का वाहन उपलब्ध कराया जा सकता है। यह भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि निधियों का लाभ उठाते समय नई गायें खरीदी जाएं बजाये इसके कि लाभार्थियों के पास पहले से उपलब्ध गायों को ही नई गायों की खरीद के रूप में दिखा दिया जाये। *(40 अंक)*

2. महालेखा नियंत्रक की ओर से मुख्य लेखा नियंत्रकों को भेजे जाने वाले अर्ध सरकारी पत्र का मसौदा तैयार कीजिये जिसमें उनसे उनके मंत्रालयों में करेतर राजस्व के संग्रहण के लिए डिजीटल लेनदेनों को बढ़ावा देने और इन प्राप्तियों को महालेखा नियंत्रक कार्यालय द्वारा विकसित करेतर प्राप्ति पोर्टल (भारत कोष) पर डालने के लिए कहा गया हो। *(25 अंक)*

3. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिये।

Social networking sites created the problem of fake news by creating a transmission technology that allows super quick spread of dangerous information and at the same time taking away the business of mainstream media.

Companies that provide communication services that allow instantaneous spread of false rumours should be more responsible. WhatsApp and other social networks in general have a responsibility to make their networks less convenient for peddlers and merchants falsehood and other dangerous stuff.

It is understood that WhatsApp is working on labelling forwarded messages so that users can at least be aware that the sender may just be passing on something he received. It is also developing machine learning capacities to identify false/dangerous messages.

(10 अंक)

4. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं पांच के 2–2 पर्यायवाची शब्द लिखिये :–
   1. भोजन
   2. समारोह
   3. अभिलाषा
   4. शिष्य
   5. व्यथा
   6. कठोर
   7. दर्पण

(5 अंक)

5. निम्नलिखित मुहावरों में किन्हीं पांच का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :–
   1. घाव पर नमक छिड़कना
   2. हक्का–बक्का खड़ा रह जाना
   3. पेट में चूहे कूदना
   4. नमक मिर्च लगाना
   5. ईंट से ईंट बजाना
   6. कानों–कान खबर न होना
   7. अंगारों पर पैर रखना

(10 अंक)

6. निम्नलिखित वाक्यो/वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें :–
   1. जन्म से लेकर अब तक
   2. जिसके पास धन न हो
   3. जो जीवन भर का साथी हो
   4. जो शोक से आकुल हो
   5. जो रोग से मुक्त हो

(5 अंक)

7. निम्न लिखित अशुद्ध शब्दों में से किन्हीं पांच की शुद्ध करके लिखिये :–
   1. खिढ़की
   2. मन्डल
   3. नच्छत्र
   4. भविश्य
   5. किरन
   6. करम
   7. घनिष्ट

(5 अंक)